बुद्धवर्ष 2551, फाल्गुन पूर्णिमा, 21 मार्च, 2008 वर्ष 37 अंक 9

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

निट्ठङ्गतो असन्तासी, वीततण्हो अनङ्गणो।
अच्छिन्दि भवसल्लानि, अन्तिमोयं समुस्सयो॥
-- धम्मपद ३५१, तण्हावग्गो

जिसने लक्ष्य (अर्हत्व) पा लिया हो, जो निर्भय, तृष्णारहित और मलविहीन हो गया हो, जिसने भव (प्राप्त कराने वाले) शल्यों को काट दिया हो, उसका यह अंतिम जीवन (होता) है।

'बुद्धचारिका'

सुजाता की खीर

उरुवेला वनप्रदेश के 'सेना' नामक ग्राम का 'सेनानी' नामक धनी व्यक्ति। उसकी पुत्री सुजाता को वहां के एक विशाल वटवृक्ष के देवता के प्रति बहुत श्रद्धा थी। उसे यह पूर्ण विश्वास था कि उस वटदेव की कृपा के कारण वाराणसी के श्रेष्ठी के यहां उसका विवाह हुआ। उसी की कृपा से बीस वर्ष पहले उसे 'यश' नामक एक पुत्र प्राप्त हुआ। इसका उपकार मानते हुए वह प्रत्येक वैशाख पूर्णिमा के दिन अपने पतिगृह से अपने मां-बाप के पास 'सेना' ग्राम आती और अपने इष्ट वटवृक्षदेव की आराधना करती। इस बार सुजाता ने अपने आराध्य वटदेव को भोग लगाने के लिए बहुत सघन और स्वादिष्ट खीर बनायी। उसने अपनी दासी को वटवृक्ष के स्थान को साफ करने के लिए भेजा। वहां दासी ने देखा कि वटवृक्ष के तले एक तपस्वी ध्यानमग्न बैठा है। तपस्वी का चमकता हुआ मुखमंडल और उसके आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर दासी आश्चर्यचकित रह गयी। उसे यह भ्रम हुआ कि आज वृक्षदेवता मालकिन की खीर स्वीकार करने के लिए स्वयं सशरीर प्रकट हुए हैं।

वह हर्ष के मारे मालकिन को यह शुभ सूचना देने के लिए दौड़ी-दौड़ी घर गयी। सुजाता भी यह सुन कर विस्मयविभोर हुयी और सोने के पात्र में खीर भर कर अपने उपास्य देवता को भोग लगाने के लिए पहुँची। लेकिन सुजाता बहुत चतुर थी। किसी भ्रम में आने वाली नहीं थी। उसने देखते ही जान लिया कि वह वृक्ष का देवता नहीं है बल्कि किसी ऊंचे कुल से गृह त्यागा हुआ तपस्वी है। वह उसे खीर भेंट कर अत्यंत हर्षित हुई।

इस सच्चाई की जानकारी के अभाव में कुछ लोगों ने मनगढंत बातें जोड़ दीं। इसी कारण यह मिथ्या मान्यता चल पड़ी कि सुजाता ने वटदेव से एक धनसंपन्न ससुराल और योग्य पति और उससे एक पुत्र-प्राप्ति की कामना की थी। इस मिथ्या मान्यता के आधार पर सुजाता को कुमारी युवती बताया गया। जबकि वास्तविकता यह है कि वह प्रौढ़ अवस्था प्राप्त कर चुकी थी। उसे योग्य घर और वर कब के प्राप्त हो चुके थे और एक पुत्र भी, जो अब वयस्क हो गया था। उसका विवाह भी कर दिया गया था। परंतु वह गृहस्थ जीवन में जरा-भी रुचि नहीं रखता था। सुजाता को विश्वास था कि देवता की कृपा से ही उसकी कामना-पूर्ति हुई थी। इसका आभार मानते हुए वह प्रति वर्ष इसी महीने जब अपने पीहर आती तब वटदेवता को नमन कर भोग लगाने अवश्य जाती। इस बार यह प्रार्थना भी करने आयी थी कि उसका पुत्र अन्य युवकों की भांति सांसारिकता की ओर आकृष्ट हो।

परंतु इस अवसर पर इस युवा तपस्वी को देखकर उसके भीतर का वात्सल्यभाव जागा। उससे कुछ मांगने के स्थान पर मातृभाव की ममता से अभिभूत होकर युवा तपस्वी को खीर अर्पण करते हुए यह आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी तपस्या सफल हो! बोधिसत्त्व का यह अंतिम भोजन था। अगली रात उसे सम्यक संबोधि प्राप्त होनी थी। इसलिए इस भोजनदान को बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

मार पराजित

सुजाता की खीर ग्रहण करने के बाद निरंजरा नदी के समीप साल-वृक्षों की छाया में बोधिसत्त्व ने कुछ देर विश्राम किया। दिन ढलने के पहले पीपल के वृक्ष तक लौट कर, उसके नीचे फिर ध्यान करने बैठ गया।

बचपन में कपिलवस्तु के खेतों के समीप जामुन वृक्ष की छाया में बैठ कर जिस **'आनापानसति'** (*अपने आश्वास-प्रश्वास के प्रति सजग रहने*) की साधना की थी, वही करने लगा। सहज, स्वाभाविक सांस के आगमन और निगमन और शरीर पर होने वाली संवेदनाओं के उदय-व्यय स्वभाव को, भावनामयी प्रज्ञा के साथ सतत सजग रहने का अभ्यास करता रहा। ध्यानस्थ होते ही बोधिसत्त्व ने यह प्रण किया, "जब तक मुझे सम्यक संबोधि प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक मैं इसी आसन में अडिग बैठा रहूंगा। चाहे मेरे शरीर की मांस, मज्जा और रक्त सभी सूख जायँ, तब भी विचलित नहीं होऊंगा।"

मृत्युराज मार ने उसे विचलित करने के अनेक प्रयत्न किये। बोधिसत्त्व मृत्यु के क्षेत्र को, यानी भवसंसरण को, पार करने का प्रयत्न कर रहा है, यह देख कर मार तिलमिला उठा। यदि वह सफल

हो गया तब उसके लिए यह जन्म अंतिम जन्म साबित होगा (**- अयं मे अन्तिमा जाति**) और इस बार की मृत्यु उसकी अंतिम मृत्यु होगी। उसका पुनर्जन्म नहीं होगा (**- नत्थि दानि पुनब्भवोति**)। वह मेरे जन्म-मृत्यु के भवसंसरण के साम्राज्य-क्षेत्र से बाहर निकल जायगा। यह मेरी बहुत बड़ी पराजय होगी।

अतुल भय और आतंक से ही यह विचलित होगा और तपस्या त्याग देगा। तभी मेरी विजय होगी, इसकी पराजय होगी।

इस योजना को सक्रिय रूप देने के लिए उसने मायावी रूप बना कर सहस्र भुजाओं में, सहस्र प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण किये और गिरिमेखला नामक मायावी भयावह गजराज पर सवार होकर बोधिसत्त्व को पराजित करने के लिए आ पहुँचा। अपने साथ बहुत बड़ी संख्या में मायावी मार-सेना भी ले आया, जो बोधिसत्त्व को भयभीत करने के लिए अनेक मायावी उपक्रमों में लग गयी। परंतु बोधिसत्त्व इनसे रंचमात्र भी विचलित नहीं हुआ।

यह देख कर मार गरजता हुआ बोला कि जिस वज्रासन पर तुम बैठे हो, वह मेरा है। इस पर तेरा कोई अधिकार नहीं है। अडिग अडोल बैठे हुए तपस्वी बोधिसत्त्व ने कहा कि इस आसन पर उसी का अधिकार होता है जिसने सभी पारमिताएं पूरी कर ली हों। अतः इस पर मेरा अधिकार है, क्योंकि मैंने सभी पारमिताओं का संचय पूरा कर लिया है। उसने पृथ्वी की ओर संकेत करते हुए कहा कि यह पृथ्वी साक्षी है। इस पृथ्वी पर मैंने अनेक जन्मों में पारमिताएं पूरी की हैं। इस सत्यघोषणा से पृथ्वी पर एक कंपन हुआ। मानो पृथ्वी ने इस सच्चाई की साक्षी दी। बोधिसत्त्व को भयभीत करने का बुरा संकल्प लेकर आया हुआ मार यह देख कर स्वयं भयभीत हो गया। वह तत्काल अपनी सेना के साथ वहां से पलायन कर गया।

मार की सारी करतूतें असफल रहीं। असंख्य जन्मों से एकत्र की गयी पुण्य-पारमिताओं का कवच बोधिसत्त्व की रक्षा करता रहा। कोई मायावी प्रहार उसे छू तक नहीं सका। उसका बाल भी बांका नहीं कर सका। बोधिसत्त्व नितांत निर्भय बना रहा। प्रतिक्षण असीम मैत्री और करुणा से भरपूर समताभरी प्रज्ञा में प्रतिष्ठित बना रहा। अपराजित बोधिसत्त्व की जीत हुई। पापी मार पराजित हुआ।

दान आदि पारमिताओं के बल पर ही बोधिसत्त्व विजित हुआ। तभी कहा गया –

दानादि-धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो...

– (जयमङ्गल-अट्ठगाथा)

पौराणिक वर्णन एक ओर रखें और मनोवैज्ञानिकता के आधार पर यथार्थ को समझें। बोधिसत्त्व से युद्ध करने के लिए अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर हाथी-घोड़ों पर सवार मार और मार-सेना नहीं आयी। यह साधक की अपनी मानसिक दुर्बलताओं का ही आक्रमण था, जो उसे धराशायी कर देने पर उतारू था। पापी मार साधक के मन की दुर्बलताओं को उकसा कर उसे तप-भ्रष्ट करने का प्रयत्न कर रहा था। पापमयी चैतसिक दुर्बलताओं और दुर्गुणों को धर्ममयी बोधि की सबलताओं और सद्गुणों से ही हराया जा सकता था। और यही हुआ।

'वैशाख पूर्णिमा की रात बोधि-वृक्ष के तले बोधिसत्त्व सिद्धार्थ गौतम का देवपुत्र मार से जो युद्ध हुआ वह वस्तुतः धर्म का अधर्म से, निर्मलता का विकारों से, सद्गुणों का दुर्गुणों से, अमरत्व का मृत्यु से युद्ध था। इस युद्ध में जीत धर्म की हुई। इस जीत से ही बोधिसत्त्व सम्यक संबुद्ध बने, सर्वजिन बने, सर्वज्ञ बने।'

सम्यक संबोधि

वैशाख पूर्णिमा की संध्या बीतने के पूर्व ही पापी मार पराजित होकर पलायन कर गया। बोधिमंड का वातावरण शांत हो गया। मार सेना के उपद्रवों से अशांत हुआ पर्यावरण अब अपरिमित शांति में परिणत हो गया। पश्चिम में सूर्य का गोलक धीरे-धीरे अस्तांचल की ओर ढलता चला गया। पूर्व के क्षितिज से वैशाख पूर्णिमा का चांद शनैः शनैः ऊपर उठने लगा और सारे अंतरिक्ष पर शीतल चांदनी बिखेरता हुआ वातावरण को अत्यंत मनोरम बनाने लगा। अब बोधिसत्त्व निर्विघ्न ध्यान में लग गया।

रात्रि के प्रथम याम में बोधिसत्त्व प्रथम ध्यान में समाहित होने के पश्चात क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे ध्यान में स्थापित हो गया।

रात के प्रथम याम में ही बोधिसत्त्व को दिव्यचक्षु, दिव्यश्रोत और उनके आधार पर पूर्वजन्मों की स्मृति का अभिज्ञान, यानी महाज्ञान, प्राप्त हुआ। किस प्राणी का, अपने कर्मों के अनुसार, कहां जन्म होता है – यह अभिज्ञान भी जागा। इसके साथ परचित्तज्ञान जागने पर भविष्य की जानकारी का अभिज्ञान भी जागा।

बोधिसत्त्व जब रात्रि के अंतिम याम में पहुँचा तब उसे आस्रव-क्षय, यानी चित्तमल के बहाव के नितांत क्षय हो जाने का अभिज्ञान प्राप्त हुआ। ऐसा होने पर जब सभी लोकों के परे वास्तविक नित्य, शाश्वत, ध्रुव का परिपूर्ण साक्षात्कार हुआ तब साथ-साथ सर्वज्ञता का महाज्ञान जागा। सम्यक संबोधि प्राप्त हुई। भवमुक्ति सिद्ध हुई।

यों वैशाख पूर्णिमा की रात पूरी होते-होते तपस्या सफल हुई। इस भद्रकल्प का चौथा सम्यक संबुद्ध प्रकट हुआ। अनेकों के कल्याण का द्वार खुला।

प्रत्यवेक्षण

गहकारक – इस पुनरवलोकन में सम्यक संबुद्ध ने देखा कि इस संसार में बार-बार जन्म लेते हुए इसके बनाने वाले की खोज में कितना समय व्यर्थ गँवाया। लंबे अतीत काल से एक मान्यता चली आ रही थी, जो आज भी चल रही है, कि इस संसार को बनाने वाला कोई ईश्वर है, जो हर प्राणी की मृत्यु के बाद उसे अगला जीवन जीने के लिए नया शरीर बना कर देता है। यदि उस ईश्वर के दर्शन हो जायँ तो भवसंसरण से मुक्ति मिल जाय। बोधिसत्त्व को मार के दर्शन हुए, जो कि मरणोपरांत प्राणियों को नये-नये जन्म लेते हुए देख कर

खुश होता है। लेकिन उसके दर्शन से मुक्ति तो नहीं ही मिली। मुक्ति मिली बार-बार जन्मने के उपकरणों के दर्शन से। दर्शन हुए अविद्या के अंधकार में जन्म लेती हुई तृष्णा के। दर्शन हुए इस सच्चाई के कि विद्या के प्रकाश में अंधकारमयी अविद्याजन्य तृष्णा नहीं उपज पाती। यानी दर्शन हुए नये भवसंस्कार न बन पाने के, और पुरानों का निष्कासन हो जाने के। इसी दर्शन ने मुक्ति प्रदान की।

सम्यक संबुद्ध ने देखा कि मैंने अविद्या को नष्ट करके, तृष्णा को जड़ से उखाड़ दिया। नये संस्कार बनने बंद हुए तो पुरातन संस्कारों के संग्रह से चित्त विमुक्त हुआ। आवश्यक उपकरणों के अभाव में अब कोई नया घर बन ही नहीं सकता। इसी गहकारक सच्चाई के दर्शन से भवमुक्ति हुई। यह स्पष्ट हुआ कि **अयं अन्तिमा जाति-** यह अंतिम जन्म था, **नत्थि दानि पुनब्भवोति-** अब पुनः जन्म नहीं होगा। भव-संसरण टूट चुका।

सम्यक संबोधि की निर्वाणिक सुख-शांति प्राप्त होने पर संबुद्ध ने सिंहावलोकन करते हुए देखा कि यह सब कैसे हो गया?

जब पुनरावलोकन किया तब दूसरी सच्चाई यह स्पष्ट हुई कि आदि से अंत तक सारा मार्ग यथाभूत सत्य, यानी यथार्थ, पर आधारित था। सर्वत्र यथाभूत का ही आलंबन रहा; यथाकृत या यथाकल्पित या यथावांछित या यथाआरोपित का नहीं। सारा मार्ग सच्चाई का ही रहा। सत्य पर ही अवलंबित है। धर्म इसीलिए सद्धम्म, यानी सत्यधर्म, कहलाया।

आगे जाकर सच्चाई का यही आलंबन हमारे महान संतों की वाणी में भी समा गया। जब हमारे यहां के एक महान संत ने कहा –

आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु।

– आदि से अंत तक सच्च ही सच्च।

संत को झूठ का आलंबन नहीं सुहाता। इसीलिए कहता है –

किव सचिआरा होईए, किव कूड़ै तुटै पालि।

झूठ की सारी परतें टूट जायँ। केवल यथाभूत सच पर ही आधारित होकर सचियारे बनें।

यथाभूत सच वह जो क्षण-प्रतिक्षण अपने आप प्रकट होता है। यथाआरोपित नहीं, यथाकृत नहीं। यथार्थतः जब जैसा है, तब तैसा है। तभी कहा –

थापिआ न जाइ, कीता न होइ। आपे आपि निरंजनु सोइ॥

सत्य वह जो अपने आप प्रकट होता है। उस पर अपनी ओर से कोई दार्शनिक मान्यता थोपी नहीं जाती। उस नैसर्गिक सत्य को अनदेखा, अनजाना करके, उसकी जगह कोई बनावटी कृत्रिम सत्य आरोपित नहीं कर दिया जाता।

उस नैसर्गिक सत्य का कोई रूप नहीं होता, वह देखा नहीं जाता, इसीलिए निरंजन कहलाता है। उसे केवल अनुभव किया जा सकता है।

सच्चनाम

भारत की प्राचीन भाषा में चित्त और चित्तवृत्तियों को नाम कहते थे। *(अभिधम्मत्थ सङ्गहो, अभिधम्मावतार-नामरूपपरिच्छेदादि-१२०५, दिट्ठिविसुद्धिनिद्देसो)* जिसका चित्त और चित्तवृत्तियां सदा सच में ही समायी रहें, वही **सच्चनाम** कहलाये। बुद्ध का नाम, यानी उनका चित्त और चित्तवृत्तियां, सदा सच में समायी रहती थीं। इसलिए उन्हें **सच्चनाम** की संज्ञा से बुलाया गया। आगे जाकर अनेक संतों ने परमात्मा के लिए सच्चनाम या सत्तनाम शब्द का प्रयोग किया।

सद्धर्मपथिक,

स.ना.गो.

(क्रमशः)

मुंबई महानगरपालिका की स्कूलों में बच्चों को आनापान

पूज्य गुरुदेव की अनुमति से गत वर्ष 'मनपा' स्कूल के लगभग ६००० बच्चों को हाई स्कूल परीक्षा के पूर्व आनापान की साधना सिखायी गयी थी। इस वर्ष ९वीं कक्षा के लगभग १०,००० बच्चों को आनापान सिखायी जायगी। यह कार्यक्रम अप्रेल के प्रथम सप्ताह में आरंभ हो रहा है जो कि मई के अंत तक चलेगा। कार्यक्रम की जानकारी http://www.vri.dhamma.org/anapana/bmc.html वेबसाइट पर उपलब्ध है।

पूज्य गुरुदेव इस बात से प्रसन्न हैं कि नई पीढ़ी को इतनी कम उम्र में धर्म का बीज मिलने का महान कार्य हो रहा है जो निश्चित ही समय पा कर उगेगा और विशाल वृक्ष का रूप धारण करेगा।

इस महान पुण्यवर्धक कार्य को संपन्न करने के लिए अनेक धर्मसेवकों की आवश्यकता है। धर्मसेवकों को अपनी पुण्यपारमी पुष्ट करने का बहुत बड़ा सुअवसर प्राप्त हुआ है। जो साधक कम-से-कम तीन शिविर कर चुके हैं और ५० वर्ष तक की उम्र के हैं, वे इसके लिए योग्य पात्र माने जायेंगे। वास्तविक योग्यता बच्चों के साथ काम करने की इच्छाशक्ति और क्षमता ही होगी। ऐसे धर्मसेवकों को प्रशिक्षण-कार्यशाला में भाग लेना होगा ताकि उनके द्वारा बच्चों को अधिकतम लाभ मिल सके। तदर्थ ईमेल **संपर्क** – mailto:childrencourse@vsnl.com

व्यक्तिगत **संपर्क** – १. श्री आदित्य सेजपाल- ९८२००२२९९०
२. श्री रामनाथ शेनाय- ९८२०३ ७४००६.

"विपस्सना रिसर्च इंस्टीट्यूट" (विपश्यना विशोधन विन्यास) के लिए,
विपश्यना के वरिष्ठ सहायक आचार्य तथा
बाल-शिविर प्रशिक्षण संयोजक।

सहायक आचार्य प्रशिक्षण-कार्यशाला (सन २००८)

भारत में निम्नांकित तिथियों एवं स्थानों पर नवनियुक्त सहायक आचार्यों के लिए प्रशिक्षण-कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। स० आचार्य अपनी सुविधानुसार उनमें भाग ले सकते हैं। प्रशिक्षु सहायक आचार्यों से निवेदन है कि वे समय रहते संबंधित व्यवस्थापक से संपर्क करके अपना स्थान सुरक्षित करवा लें।

दि. १ से ४ मई, धम्मतपोवन, इगतपुरी
(नवयुवाओं के शिविर-संचालक आचार्यों के लिए)

दि. १२ से १५ जुलाई, धम्मलक्खन, लखनऊ

दि. २७ से ३० अगस्त, धम्मखेत्त, हैदराबाद

दि. २ से ५ अक्टूबर, धम्मसिन्धु, बाड़ा (कच्छ)

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1-2. Mr. Harry & Mrs. Vivian Snyder, USA
To serve Mongolia in addition to Introducing Vipassana in Prisons and Government of USA

नये उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1-2. Mr. Ian & Dr. (Mrs.) Shelina Hetherington, *UK, Spread of Dhamma*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री विक्रम डांडिया, इगतपुरी. *धम्मबोधि एवं धम्मसुवत्थी की सेवा में केंद्रीय आचार्य की सहायता।*
२. श्री अभिजीत पाटील, नाशिक
3. Ms. Andrea Schmitz, *Germany*

सहायक आचार्य

१-२. श्री प्रह्लाद एवं श्रीमती संगीता चौधरी, इंदौर
३. श्री श्रीनिवास मूर्थी, दावनगेरे, कर्नाटक
४. श्री सचिन नातू, पुणे
५. श्री राजकिशोर नायक, भुवनेश्वर
६. श्री तात्यासाहब पाटील, कोल्हापुर
७. श्री गौतम गायकवाड, मुंबई
8. Ms. Marieke Landuijt, *the Netherlands*
9. Mr. Adi Loo, *USA*
10. Ms. Veronika Gruber, *Canada*

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्रीमती दमयंती बोदाना, मुंबई
२. श्री संकेत डेढिया, मुंबई
३. श्री हेमंत देसाई, मुंबई
४. श्रीमती वैशाली गोंडाने, मुंबई
५. श्रीमती ऋतु खेतवानी, मुंबई
६. श्री नितीन कासले, मुंबई
७. श्रीमती चेतना नागदा, मुंबई
८. श्रीमती प्रभावती सूर्यवंशी, नाशिक
९. श्री वी. नारायण, चेन्नई
१०. श्री एन. प्रेमकुमार, चेन्नई
११. श्री जी. सिद्धार्थ मुथुकुमार, मदुराई
१२. श्री पी. थामोथरन, तिरुनेलवेली
१३. श्री एन. वसंथकुमार, चेन्नई
14. Ms. Heidi Green, *UK*

दोहे धर्म के

पहली मंजिल शील है, दूजी मंजिल ध्यान।
तीजी प्रज्ञा पुष्टि की, अंतिम पद निर्वाण॥
पंच शील सम्पन्न हो, हो समाधि सम्पन्न।
जब प्रज्ञा सम्पन्न हो, तभी धर्म सम्पन्न॥
शील हमारा शुद्ध हो, हो समाधि भी शुद्ध।
जब प्रज्ञा भी शुद्ध हो, होंय तभी हम शुद्ध॥
प्रज्ञा शील समाधि की, बहे त्रिवेणी धार।
डुबकी मारे सो तिरे, हो दुख-सागर पार॥
पंच शील पालन भला, सम्यक भली समाधि।
प्रज्ञा तो जाग्रत भली, दूर करे भव-व्याधि॥
दुर्लभ जीवन मनुज का, बड़े भाग्य से पाय।
प्रज्ञा शील समाधि बिन, देवे वृथा गँवाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

कम खाणो, कम सोवणो, काया वाणी मौन।
मार न बिचलित कर सकै, ज्यूं परबत नै पौन॥
धरम पंथ री जातरा, सदा मांगळिक होय।
साधक रो अभ्यास सम, कदे न निस्फळ होय॥
कदम कदम मंगळ हुवै, कदम कदम उपकार।
कदम कदम चलता हुयां, होवै दुख स्यूं पार॥
राग रवै ना द्वेस ही, रवै न मन अभिमान।
पावन पथ चित सुद्धि रो, करै परम कल्याण॥
धरम पंथ री जातरा, प्रथम पांवडो दान।
दूजो, तीजो, चोथियो, सील, समाधि ग्यान॥
बुद्ध जिसो ना रतन है, धरम जिसो न रतन।
संघ जिसो ना रतन है, जो पावै सो धन्न॥

देबेनरा मूंदड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2551, **फाल्गुन पूर्णिमा,** 21 **मार्च,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org